ताज महल

कैरोलीन अर्नोल्ड और मेडेलीन कोमोरा

चित्र: राहुल भूषण

हिंदी: नीला त्रिवेदी

बंदना सेन—सी.ए. के लिए

राहुल—एम.सी. के लिए

मेरे पिता की स्मृति में, और मेडेलीन—आर.बी. के लिए

लेखक और चित्रकार अपनी गहनतम कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं

सुल्तान गालिब अल कुआइती (हद्रामौत के पूर्व सुल्तान) को,

जगदीश मित्तल, क्रिस्टोफर और इंग्रिड वाइमन, तथा सफ़ीर अहमद को

उनके अमूल्य योगदानों के लिए।

ताज महल

कैरोलीन अर्नोल्ड और मेडेलीन कोमोरा

चित्र: राहुल भूषण

हिंदी: नीला त्रिवेदी

बहुत समय पहले भारत में मुग़लों का शासन था। यह वह युग था जब वैभव और सौंदर्य अपने चरम पर थे। उन्होंने भव्य महलों और सुरम्य बाग़ों का निर्माण कराया—ऐसे महल जिनकी दीवारें कहानियाँ कहती थीं और ऐसे बाग़ जिनमें हर ऋतु अपनी अलग ही छटा बिखेरती थी।

धीरे-धीरे इन कथाओं की गूँज चारों दिशाओं में फैलने लगी। संसार मुग़ल साम्राज्य की अपार संपदा, उसकी अनूठी संस्कृति और भव्यता को देखकर विस्मित रह गया। इसी महान और समृद्ध साम्राज्य में, सन् 1592 में एक राजकुमार का जन्म हुआ। उसका नाम खुर्रम था।

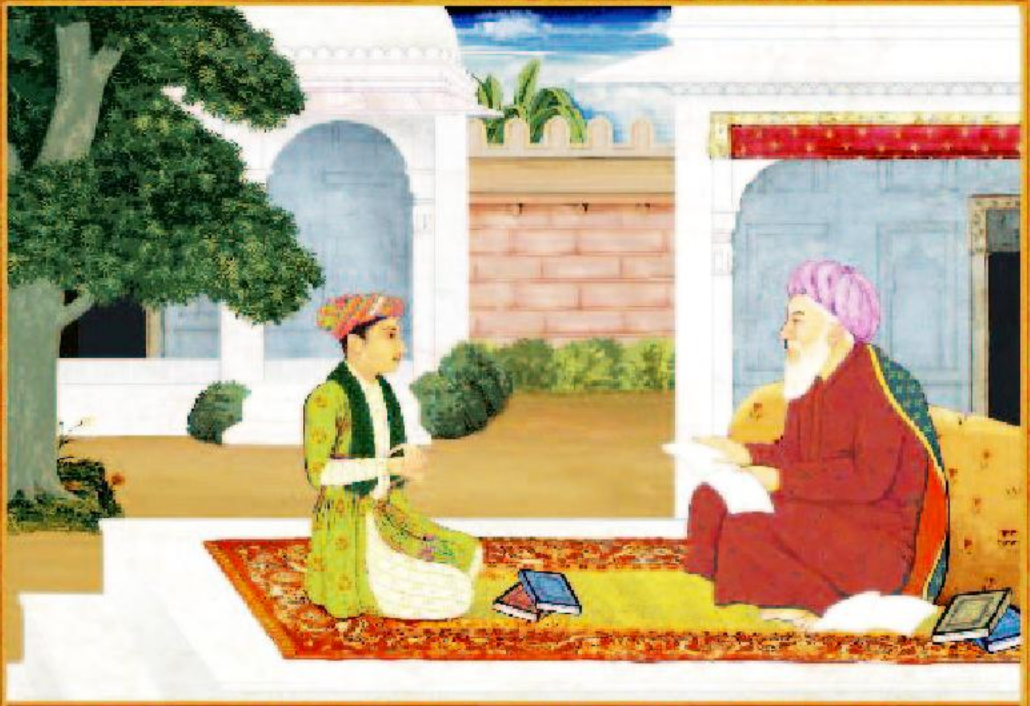

एक राजकुमार के अनुरूप, खुर्रम को देश के सबसे विद्वान और अनुभवी गुरुओं से कला और विज्ञान की शिक्षा दी गई। वह एक परिश्रमी और लगनशील विद्यार्थी था—शिकार में निपुण और शस्त्रों के प्रयोग में भी अत्यंत दक्ष।

आगरा के महल में स्थित निजी दरबार (दीवान-ए-ख़ास) में वह अपने पिता, सम्राट जहाँगीर, के समीप बैठता और बड़े ध्यान से उन्हें अपने मंत्रियों के साथ साम्राज्य के महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करते सुनता।

एक दिन जहाँगीर ने अपने पुत्र से कहा, "एक दिन तुम इस देश पर शासन करोगे, और तुम अपने साम्राज्य को महान गौरव प्रदान करोगे।"

समय बीतता गया, और राजकुमार खुर्रम एक आकर्षक, तेजस्वी और बुद्धिमान युवक के रूप में विकसित हुआ। उसका मन अब प्रेम की ओर आकर्षित होने लगा था, परंतु उसे अपनी उम्र की युवतियों से मिलने का अवसर बहुत कम मिलता था।

नए वर्ष का स्वागत करने वाले नौरोज़ उत्सव के दौरान मीना बाज़ार ही एक ऐसा अवसर था। महल की स्त्रियाँ दुकानदारों की भूमिका निभाती थीं और गरीबों के लिए धन जुटाने हेतु आभूषण, मसाले और अन्य वस्तुएँ बेचती थीं।

चूँकि वे बिना घूँघट के होती थीं, इसलिए वहाँ केवल सम्राट और कुछ चुनिंदा लोगों को ही प्रवेश की अनुमति थी। खुर्रम अपने मित्रों के साथ वहाँ आया। वे उसे चिढ़ाते हुए बोले—

"शायद आज तुम अपनी भावी पत्नी से मिलोगे।"

एक दुकान पर खुर्रम ने एक लड़की को मिठाइयाँ और रेशम बेचते हुए देखा। वह उसके कोमल हाथों को नाज़ुक कपड़े को मोड़ते हुए देखता रहा।

साँझ की रोशनी में उसकी आँखें चमक रही थीं, और एक क्षण के लिए उनकी नज़रें मिलीं।

खुर्रम का दिल तेज़ी से धड़कने लगा।उसने अपने मित्रों से पूछा—

"वह कौन है? उसका चेहरा पूर्णिमा के चाँद से भी अधिक सुंदर है।"

उन्होंने उत्तर दिया—"वह अर्जुमंद है, प्रधान मंत्री की बेटी।"

खुर्रम अपनी नज़रें उससे हटा नहीं सका। वह समझ गया कि उसे इस मोहक लड़की से अवश्य मिलना होगा।

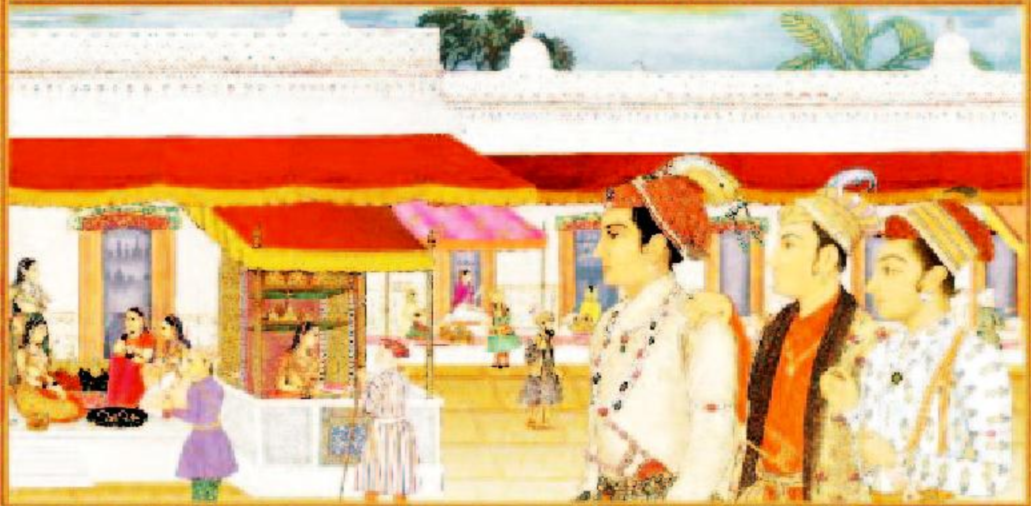

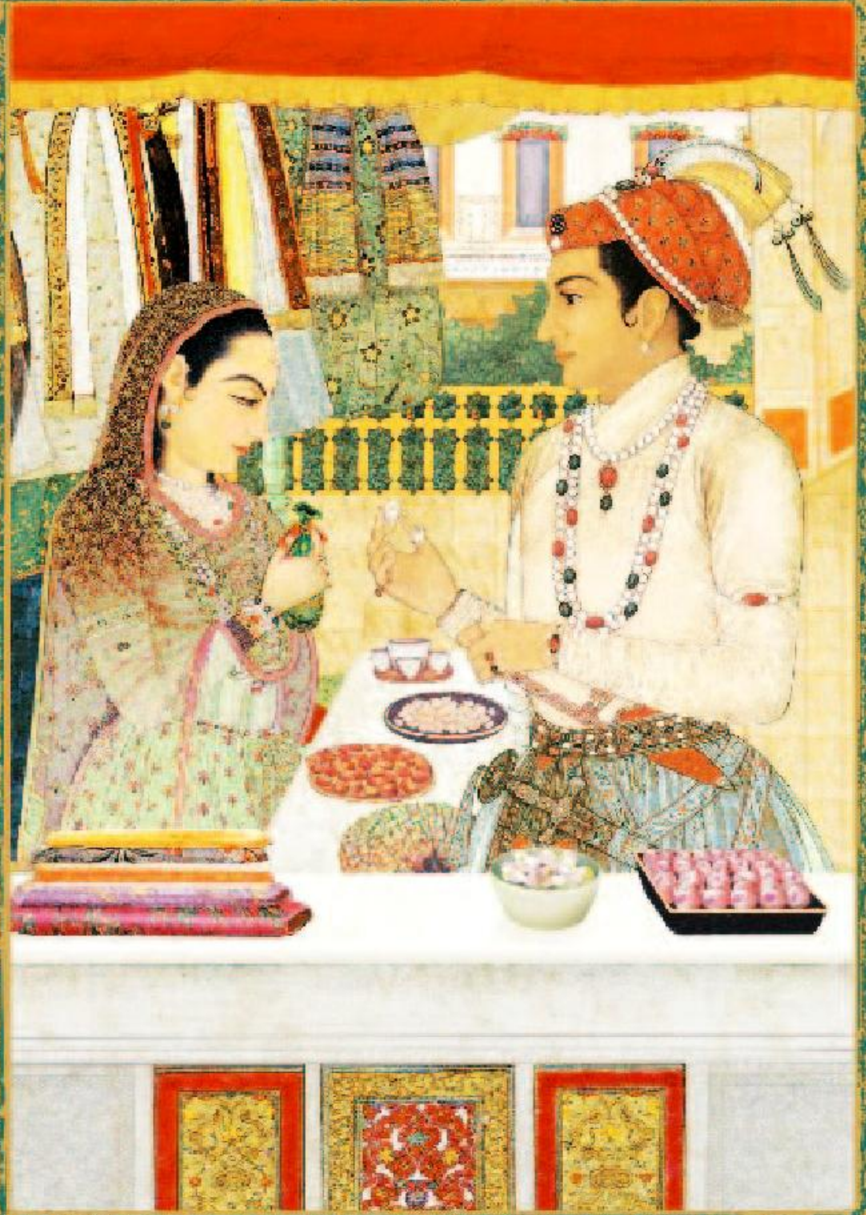

राजकुमार खुर्रम ने साहस जुटाया और अर्जुमंद के पास पहुँचा। उसकी मधुर आवाज़ सुनने की उत्सुकता में उसने पूछा, "इस टुकड़े की कीमत क्या है?"

अर्जुमंद को विश्वास ही नहीं हुआ कि स्वयं राजकुमार उससे बात कर रहे हैं। वह मुस्कराई और हल्के से छेड़ते हुए बोली, "महाराज, आप भूल कर रहे हैं। यह तो एक अनमोल हीरा है। क्या आप इसकी चमक नहीं देख पा रहे? इसकी कीमत है—दस हज़ार रुपए।"

एक राजकुमार के सामने इतनी ऊँची कीमत बताना और इतने साहस से बात करना, सचमुच असाधारण था। लेकिन मीना बाज़ार में मोलभाव एक खेल की तरह था, जिसका हर कोई आनंद लेता था। अर्जुमंद को आश्चर्य हुआ जब खुर्रम ने बिना किसी झिझक के उसकी बताई कीमत स्वीकार कर ली।

वह मुस्कराकर बोला, "इसके वास्तविक मूल्य का तो यह केवल एक छोटा-सा हिस्सा है... अब जबकि इसे तुम्हारे हाथों ने छू लिया है।"

यह सुनकर अर्जुमंद के गाल लज्जा से लाल हो उठे, और उसने अपनी नज़रें झुका लीं। खुर्रम ने उसे अपनी थैली सौंप दी। जब वह सोने के सिक्के गिन रही थी, खुर्रम मन ही मन उसके हाथों को छूने की इच्छा को रोक नहीं पा रहा था। उसने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया था।

उसकी सुंदरता से मोहित होकर, उसे यह अहसास हो चुका था कि वह उसी से सदा के लिए बंध जाना चाहता है। "मैं इस रत्न को अपने हृदय के पास सँभालकर रखूँगा... जब तक कि हम फिर से न मिलें," उसने कहा।

अर्जुमंद ने उसकी आँखों में गहराई से झाँका—उनमें प्रबल प्रेम की ज्वाला जल रही थी। अब उसे समझ आ गया कि यह कोई साधारण खेल नहीं था। वह धीमे स्वर में बोली, "और वह दिन कब आएगा?"

खुर्रम ने फुसफुसाते हुए उत्तर दिया, "जिस दिन हमारे दिल एक हो जाएँगे..." फिर वह बोला, "उस दिन मैं तुम्हें असली हीरे दूँगा—जो सितारों से भी अधिक चमकदार होंगे।"

इन शब्दों को सुनकर अर्जुमंद का हृदय उल्लास से भर उठा। वह भी प्रेम में पड़ चुकी थी।

राजकुमार खुर्रम उस बाज़ार से ऐसे लौटे मानो किसी स्वप्नलोक से बाहर आए हों—उनका मन हल्का था, परंतु विचारों में उसी युवती की छवि बार-बार उभर रही थी।

उन्होंने उत्साह से अपने मित्रों से कहा, “मैंने उसे पा लिया है—वही होगी मेरी जीवनसंगिनी!”

मित्रों ने सावधानी से उन्हें चेताया, “सम्राट कभी इसकी अनुमति नहीं देंगे। वह कोई राजकुमारी नहीं है।”

किन्तु खुर्रम अपने निर्णय में अडिग थे। वे सीधे अपने पिता के पास पहुँचे और दृढ़ स्वर में बोले, “मैं जानता हूँ कि वह राजघराने से नहीं है, परंतु वह संसार की सबसे अनुपम सुंदरी है। मैं उससे ही विवाह करूँगा—अन्यथा किसी से नहीं।”

सम्राट जहाँगीर ने पहले तो अपने पुत्र की युवावस्था के उत्साह को देखकर उसे समझाने का प्रयास किया, परंतु जब उन्होंने अपने पुत्र के हृदय में जलती सच्ची प्रेमाग्नि देखी, तो उन्होंने दरबार के ज्योतिषियों से परामर्श लिया। जब ज्योतिषियों ने यह घोषणा की कि यह संबंध भाग्य में लिखा है, तब सम्राट ने अपनी स्वीकृति दे दी। खुर्रम हर्ष से भर उठे।

परंपरा के अनुसार, विवाह से पहले दोनों को एक-दूसरे से मिलने की अनुमति नहीं थी। इसलिए खुर्रम और अर्जुमंद अपने प्रेम को केवल कविताओं के माध्यम से व्यक्त करते—जो उनके विश्वस्त लोगों के जरिए गुप्त रूप से एक-दूसरे तक पहुँचाई जाती थीं।

अंततः वह शुभ दिन आ ही गया—विवाह का दिन।शुभ संकेत के रूप में, सम्राट जहाँगीर ने खुर्रम के सिर पर मोतियों की चमचमाती मालाएँ पहनाईं, जिनमें लाल माणिक और पन्ने जड़े हुए थे। ढोल-नगाड़ों की गूँज और शहनाइयों की मधुर धुनों के बीच, एक भव्य शाही बारात निकली। राजकुमार खुर्रम अपने घोड़े पर सवार थे, और उनके चारों ओर शाही जुलूस चलता हुआ अर्जुमंद के घर की ओर बढ़ रहा था, जहाँ विवाह का आयोजन होना था। रास्ते भर कलाबाज़ अपने करतब दिखा रहे थे, और दर्शकों की भीड़ उल्लास से भरी हुई थी। रात को आतिशबाज़ी और मशालों की रोशनी ने आकाश को जगमगा दिया। उधर, अर्जुमंद अपने घर के भीतर, चमेली के फूलों के घूँघट में सजी, धड़कते हृदय के साथ अपने प्रिय का इंतज़ार कर रही थी।

जब खुर्रम वहाँ पहुँचे, तो दोनों को विवाह कक्ष में ले जाया गया और सुनहरी कढ़ाई वाले गद्दों पर साथ बैठाया गया। उन्होंने एक साथ विवाह की प्रतिज्ञाएँ लीं—और अंततः वे पति-पत्नी बन गए।

मध्यरात्रि में एक भव्य भोज का आयोजन हुआ। अतिथियों के लिए सैकड़ों प्रकार के व्यंजन परोसे गए। संगीतकारों ने मधुर धुनें बजाईं, नर्तकियों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए, और कवियों ने नवविवाहित युगल के प्रेम का गुणगान किया। सम्राट जहाँगीर अर्जुमंद को निहारते रह गए—वह रेशमी वस्त्रों और कीमती आभूषणों से सुसज्जित थीं, और उनकी सुंदरता अलौकिक प्रतीत हो रही थी। उनकी गरिमा और सौंदर्य से प्रभावित होकर, सम्राट ने उसे एक नया नाम देने का निश्चय किया।

उन्होंने घोषणा की, "आज से तुम 'मुमताज़ महल' कहलाओगी—महल की अनमोल मणि।"

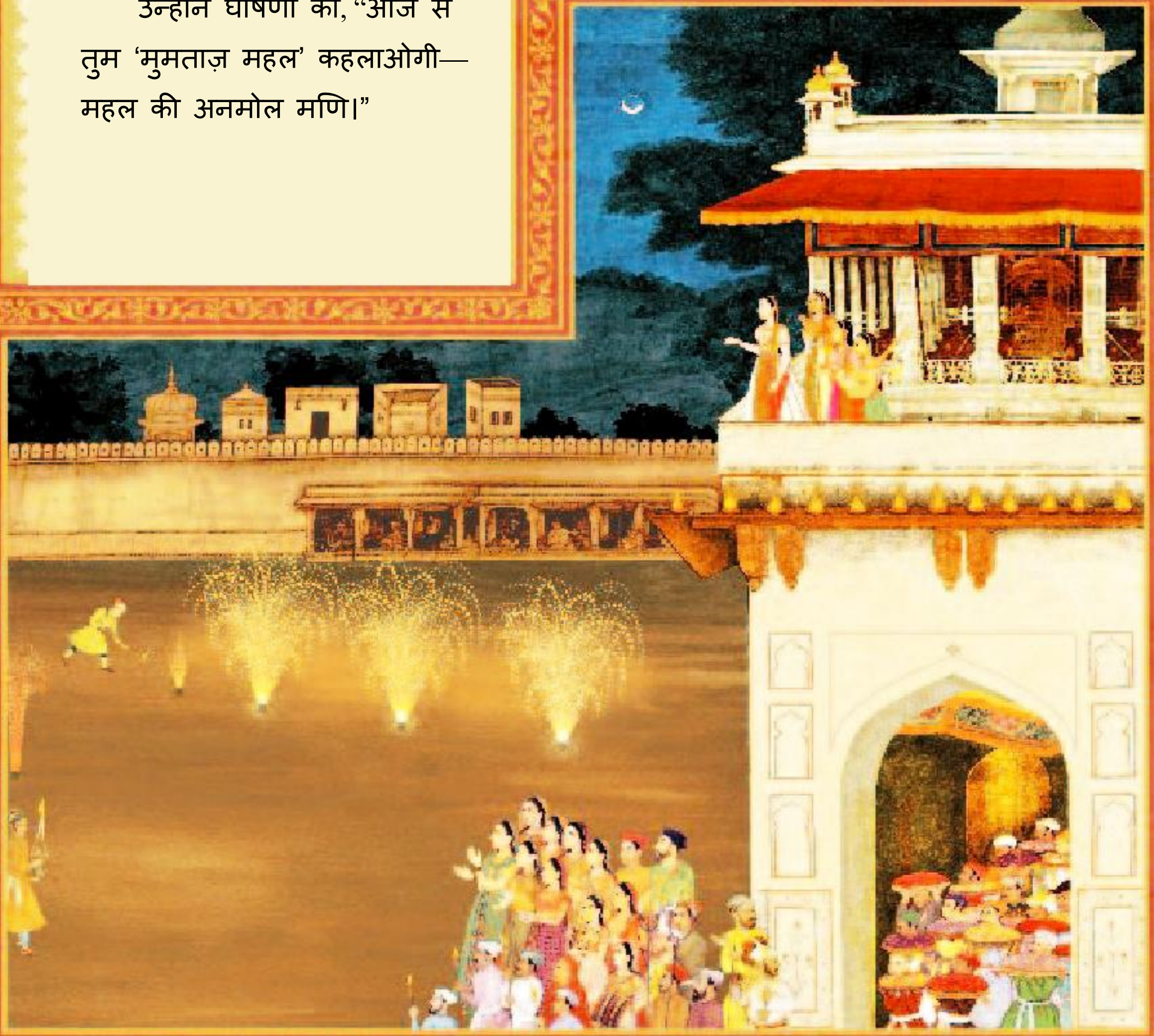

पूरा राज्य मुमताज़ महल से प्रेम करता था। चित्रकार उनके चित्र बनाते थे और कवि उनके सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए लिखते थे कि चाँद भी शर्म से अपना चेहरा छिपा लेता है और तारे अपनी चमक खो देते हैं, क्योंकि उनकी आभा मुमताज़ के सामने फीकी पड़ जाती है।

राजकुमार खुर्रम और मुमताज़ एक-दूसरे के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। खुर्रम उन्हें अनमोल रत्न भेंट करते थे और दुर्लभ फूलों से बने सुगंधित इत्र उपहार में देते थे। गर्मियों में वे शाही बागों के रसीले आमों का आनंद लेते और हिमालय की बर्फ़ीली पहाड़ियों से लाई गई बर्फ से बने ठंडे शरबत पीकर अपनी प्यास बुझाते थे।

जब दिन की गर्मी कम हो जाती, तो वे सुगंधित बागों में टहलते, जहाँ सुंदर मंडप और कमल के सरोवर होते थे।
शाम के समय वे यमुना नदी के किनारे बने चाँदनी से जगमगाते छज्जे पर बैठकर अपने मन की गहरी बातें एक-दूसरे से साझा करते थे।

खुर्रम और मुमताज़ एक-दूसरे से कभी अलग नहीं होते थे। वे एक-दूसरे से गहरा प्रेम करते थे, और उनका जीवन खुशियों से भरा हुआ था। समय के साथ मुमताज़ ने कई बच्चों को जन्म दिया।

राजकुमार खुर्रम को भव्य दावतों और राजसी समारोहों की अपेक्षा पारिवारिक जीवन अधिक प्रिय था।
हर दिन के अंत में वे अपने बच्चों के साथ समय बिताते—उनके साथ खेलते और उन्हें सिखाते थे। वे उन्हें पानी, रेत और हवा से भरे काँच के गोले लाकर प्रकृति के तत्वों के बारे में समझाते, और रत्नों की मालाएँ दिखाकर उन्हें नौ ग्रहों का ज्ञान देते थे। रात में वे चंदन और देवदार की लकड़ी से बने उनके बिस्तरों के पास बैठकर कहानियाँ सुनाते, जिससे बच्चे आराम से सो जाते थे।

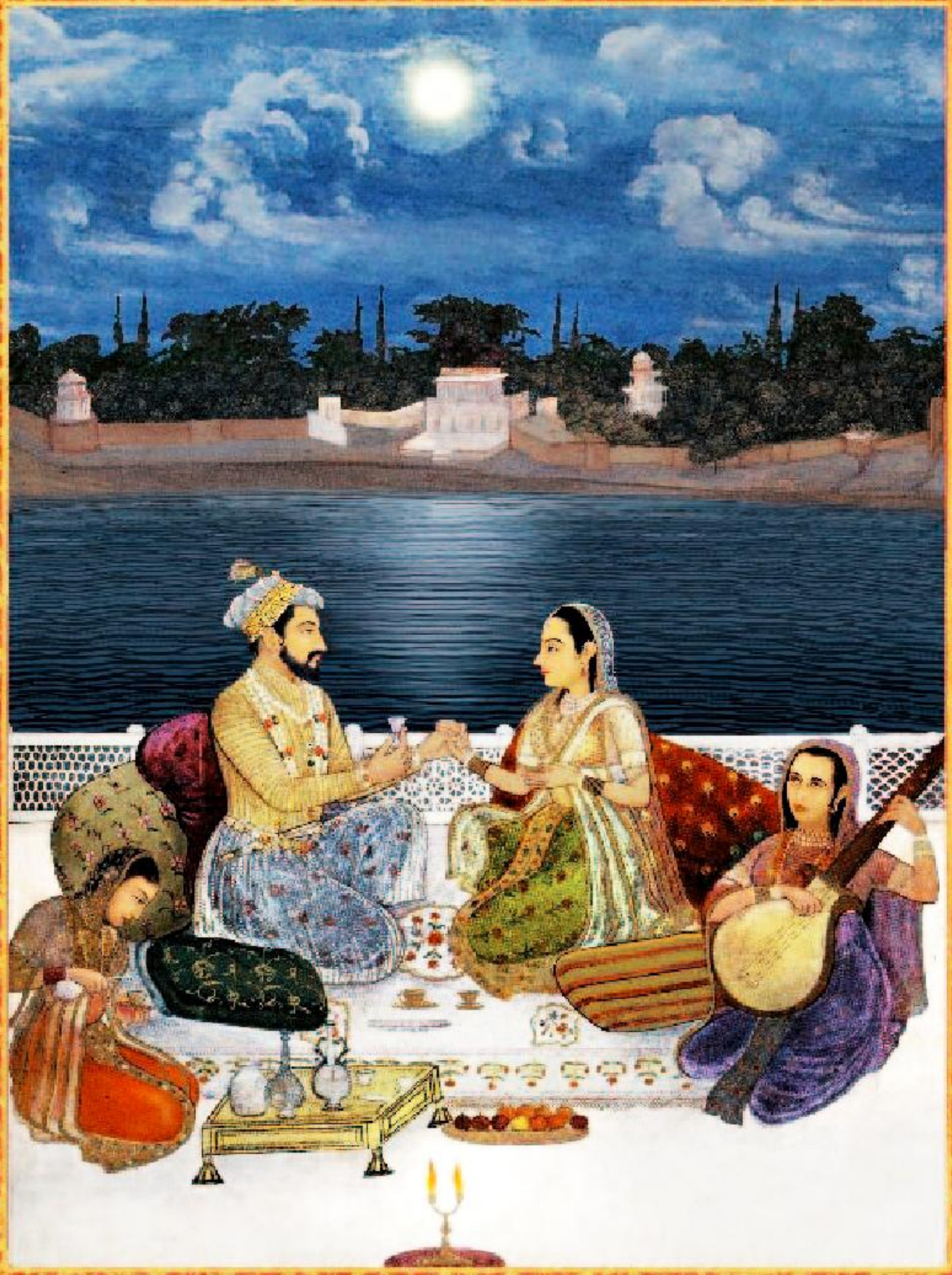

राजकुमार खुर्रम अब अपने पिता की सेना के एक कुशल सेनापति बन चुके थे। युद्धभूमि में अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए वे चारों दिशाओं में विजय प्राप्त करते गए—प्रतिद्वंद्वी राजाओं को परास्त करते हुए, उनसे कर वसूलते हुए और मुग़ल साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार करते हुए। जब भी उन्हें लंबे अभियानों के लिए घर से दूर जाना पड़ता, मुमताज़ महल सदैव उनके साथ रहतीं। दोनों एक-दूसरे से अलग रह ही नहीं सकते थे।

मुमताज़ के सान्निध्य में खुर्रम स्वयं को अजेय महसूस करते थे। उनकी विजयों का ऐसा प्रभाव था कि उनके नाम मात्र से ही शत्रु काँप उठते थे। एक विजयी अभियान में उन्होंने दक्षिण के सुल्तानों को भी मुग़ल साम्राज्य के अधीन कर लिया।

जब खुर्रम वापस लौटे, तो सम्राट जहाँगीर ने उन्हें गले लगाकर स्वागत किया और उन्हें हाथियों, घोड़ों तथा एक अनुपम, निर्दोष माणिक (रूबी) से सम्मानित किया। तत्पश्चात, सम्राट ने उन्हें "शाहजहाँ"—अर्थात् "संसार का राजा"—की उपाधि प्रदान की।

सन 1627 की शीत ऋतु में, जब शाह जहाँ एक और युद्ध में व्यस्त थे, उन्हें यह दुखद समाचार प्राप्त हुआ कि उनके पिता अस्वस्थ होकर चल बसे हैं। वे तत्काल महल लौट आए और राजकीय अंतिम संस्कार का नेतृत्व किया। सम्राट जहाँगीर के पार्थिव शरीर को एक भव्य शाही मकबरे में सुपुर्द-ए-ख़ाक किया गया। अब साम्राज्य का भार पूर्णतः शाहजहाँ के कंधों पर था।

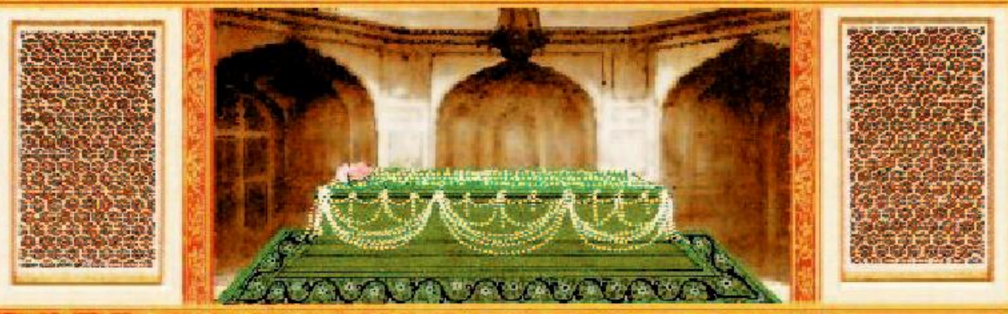

साम्राज्य को अब एक नया शासक मिल चुका था। शाहजहाँ ने अपने प्रिय हाथी पर सवार होकर एक भव्य शोभायात्रा निकाली। शाही खजाने के सबसे अनमोल रत्नों का उपयोग एक अद्वितीय सिंहासन के निर्माण में किया गया। यह स्वर्ण पैरों पर टिका हुआ था और मोरों की आकृतियों से सुसज्जित था—जिनकी पूँछों में हीरे और पन्ने जड़े हुए थे। यह था प्रसिद्ध मोर सिंहासन—इतना भव्य कि उससे अधिक अद्भुत वस्तु किसी ने कभी नहीं देखी थी।

अपनी प्रिय रानी के लिए, शाहजहाँ ने एक अत्यंत सुंदर महल बनवाया—जिसकी दीवारें रत्नों और दर्पणों से जड़ी हुई थीं। उसके आंतरिक प्रांगण, नाजुक जालियों से आच्छादित, फव्वारों की मधुर ध्वनि, पक्षियों के गीत और सुगंधित पुष्पों से सुसज्जित थे—जो रात्रि को भी महका देते थे।

शाहजहाँ हर महत्वपूर्ण निर्णय में मुमताज़ की सलाह लेते थे—और उनके निर्णयों पर पूर्ण विश्वास करते थे। मुमताज़ की तरह, शाहजहाँ भी अपने प्रजाजनों के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे। वर्ष में दो बार, वे एक विशाल तराजू पर स्वयं को तौलते और फिर अपने वजन के बराबर सोना, चाँदी, रत्न, मसाले, औषधियाँ और भोजन गरीबों तथा जरूरतमंदों में बाँट देते थे।

मुमताज़ के साथ रहते हुए, शाहजहाँ ने अत्यंत बुद्धिमता और करुणा से शासन किया—और जनता उन्हें हृदय से प्रेम करती थी।

शाहजहाँ ने अपने साम्राज्य का विस्तार युद्धों के माध्यम से जारी रखा। सबसे अधिक विरोध दक्षिण के दक्कन के राज्यों से मिला। जब वे उन्हें पराजित करने के लिए एक लंबा और कठिन अभियान शुरू करने की तैयारी कर रहे थे, तब मुमताज़ ने बताया कि वह एक और संतान को जन्म देने वाली हैं।

शाहजहाँ ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा, "मुझे जाना होगा, लेकिन मैं समय पर लौट आऊँगा।"

मुमताज़ ने विनती की, "मुझे अपने साथ ले चलिए। मैं यात्रा करने के लिए पर्याप्त स्वस्थ हूँ। आप कई महीनों तक दूर रहेंगे, मैं यह दूरी सह नहीं पाऊँगी।"

शाहजहाँ भी मुमताज़ से अलग नहीं रहना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसकी बात मान ली। जैसे-जैसे सेना दक्षिण की ओर बढ़ी, दिन हफ्तों में और हफ्ते महीनों में बदलते गए। मुमताज़ महल शाही शिविर की सीमाओं में रहतीं और अपने पति की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करतीं। संध्या के समय, जब शाहजहाँ युद्ध से लौटते, तो दोनों साथ में शांति और खुशी के कुछ पल बिताते।

एक दिन, युद्ध के बीच शाहजहाँ को वह समाचार मिला जिसका उन्हें इंतज़ार था— उनकी एक नवजात पुत्री हुई थी। वे अत्यंत प्रसन्न हुए और नए उत्साह के साथ युद्ध करने लगे। जब शाहजहाँ शिविर में लौटे, तो राजवैद्य ने बताया कि मुमताज़ बहुत कमजोर हैं और उन्हें सुबह तक आराम करना चाहिए। उस रात शाहजहाँ को नींद नहीं आई। वे मुमताज़ की चिंता में डूबे रहे और बेचैनी से सुबह होने का इंतज़ार करते रहे। अचानक एक संदेशवाहक आया और बोला, "महाराज, महारानी आपको बुला रही हैं।"

शिविरों के जाल से गुज़रते हुए, शाहजहाँ व्याकुलता से मुमताज़ के पास पहुँचे। उनकी आँखें आँसुओं से भर उठीं जब उन्होंने मुमताज़ को अत्यंत दुर्बल और ज्वर से तप्त देखा।

"मेरे प्रिय..." मुमताज़ ने धीमे स्वर में कहा, "मैं अब अधिक देर तक नहीं रह सकूँगी।"

शाहजहाँ ने उन्हें अपने आलिंगन में भर लिया और व्यथा से भरकर बोले, "मुझे छोड़कर मत जाओ।"

मुमताज़ ने उन्हें सांत्वना दी, "मेरी आत्मा सदैव आपके साथ रहेगी।"

फिर उन्होंने उनका हाथ थामकर धीमे से कहा, "मेरी एक इच्छा है—कि हमारी प्रेम कथा को पूरा संसार जाने।"

शाहजहाँ ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "अपने जीवन की शपथ, मैं इसे अवश्य पूरा करूँगा।"

और फिर, जैसे ही सूर्योदय हुआ, मुमताज़ महल—महल की वह अनमोल ज्योति—ने अपनी अंतिम साँस ली।

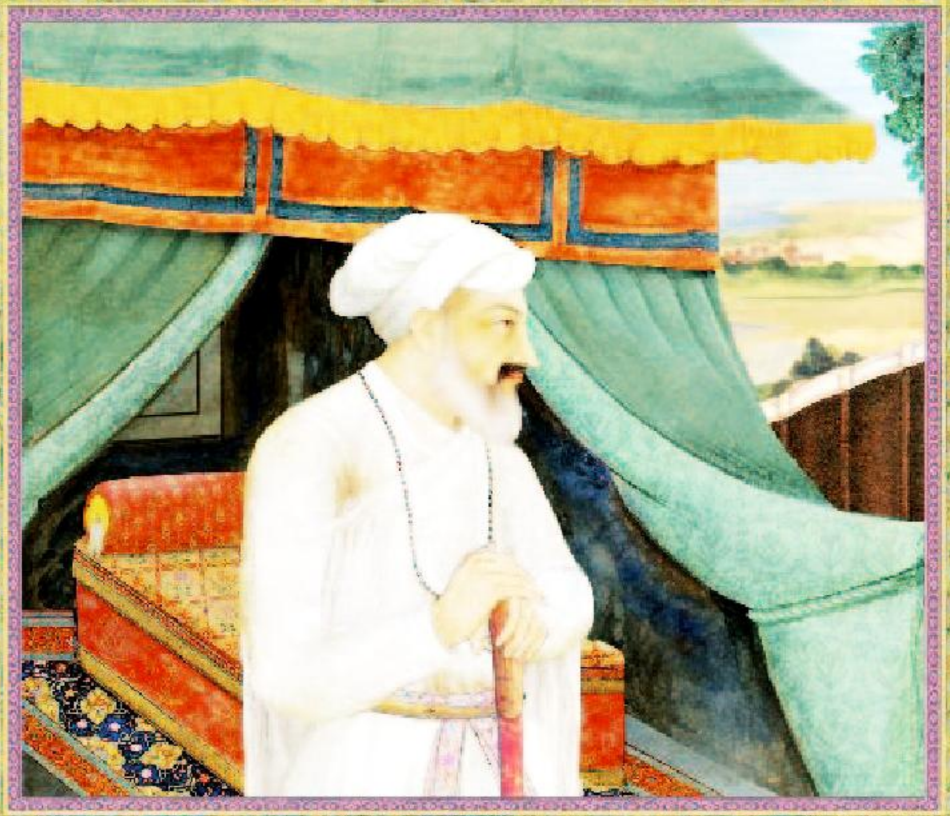

शाहजहाँ शोक से टूट चुके थे। अब उन्हें साम्राज्य के शासन में कोई रुचि नहीं रही।

आठ दिनों तक उन्होंने न तो भोजन किया, न जल ग्रहण किया। उनकी आँखें अनार के समान लाल हो गईं, और उनके केश—जो कभी काले और घने थे—एकदम सफ़ेद हो गए। उन्होंने अपने रंगीन वस्त्र और आभूषण त्याग दिए और केवल शोक के श्वेत वस्त्र धारण किए।

उन्होंने घोषणा की, "हमारी प्रिय महारानी के लिए समस्त संसार शोक मनाए।"

उनकी वेदना इतनी गहरी थी कि मानो पूरे राज्य से हँसी और उल्लास लुप्त हो गया हो।
हाथियों के खेल बंद हो गए, उत्सव रुक गए, और संगीत की ध्वनि भी मौन हो गई।

दिन-रात शाहजहाँ केवल उसी वचन के बारे में सोचते रहते, जो उन्होंने मुमताज़ से किया था। वे स्वयं से प्रश्न करते, "मैं क्या करूँ कि संसार हमारे प्रेम को सदैव याद रखे?"

एक रात उन्हें स्वप्न आया—उन्होंने मुमताज़ को एक दिव्य महल में देखा, जिसकी उज्ज्वल श्वेत दीवारें रत्नों से जड़ी थीं। जैसे ही वे जागे, उन्हें उत्तर मिल चुका था। उन्होंने तुरंत अपने शाही तंबू से बाहर आकर संदेशवाहकों को चारों दिशाओं में भेजा— ताकि संसार के श्रेष्ठतम वास्तुकारों, सुलेखकों और कलाकारों को उनके दरबार में बुलाया जा सके।

जब वे सभी दरबार में एकत्र हुए, तो शाहजहाँ ने घोषणा की, "तुम एक ऐसा मकबरा और उद्यान निर्मित करोगे, जो स्वर्ग के समान सुंदर हो। यह सम्पूर्ण संसार की सबसे भव्य रचना होनी चाहिए।"

तुरंत ही, वास्तुकारों ने मुमताज़ के मकबरे की योजनाएँ बनानी शुरू कर दीं। शाहजहाँ ने उन योजनाओं में से उस रूपरेखा का चयन किया, जो उनकी कल्पना के सबसे निकट थी। इसके बाद, उस अद्भुत स्मारक का एक अंतिम मॉडल तैयार किया गया— एक ऐसा स्वप्न, जो शीघ्र ही वास्तविकता में बदलने वाला था।

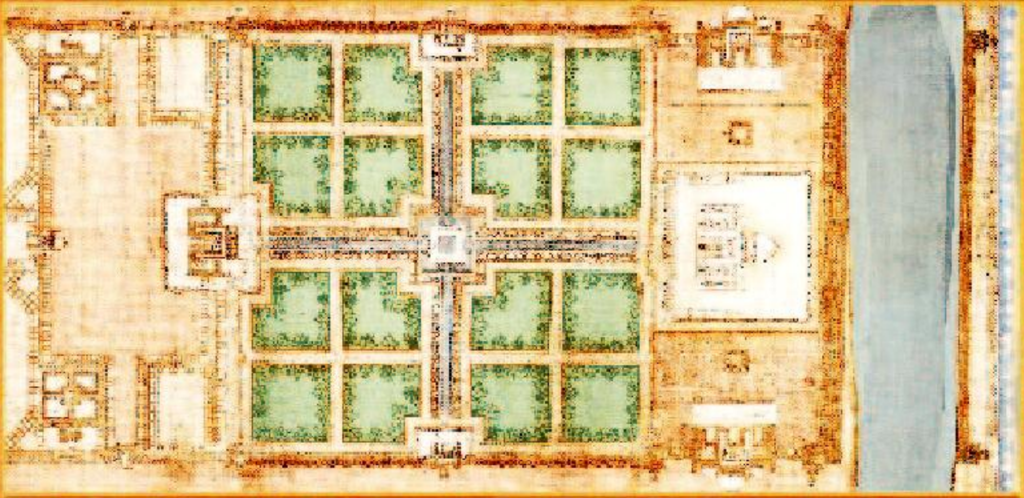

शाहजहाँ ने इस निर्माण में कोई कसर नहीं छोड़ी। श्वेत संगमरमर, जो जोधपुर की खदानों से सैकड़ों मील दूर से लाया गया था, इस महान स्मारक की नींव बना। चीन से जेड और क्रिस्टल, अफगानिस्तान से लैपिस लाजुली, मिस्र से क्राइसोलेट, अरब से मूंगा, भारतीय महासागर से मोती, और साथ ही—टोपाज़, गार्नेट, ब्लडस्टोन, ओनिक्स, अमेथिस्ट, बर्मा के रूबी, कोलंबिया के दुर्लभ पन्ने, फारस के कार्नेलियन और फिरोज़ा, हिमालय से नीलम और क्वार्ट्ज, तथा दक्कन के गोलकुंडा से हीरे— इन सभी अनमोल रत्नों को इस अद्वितीय स्मारक के निर्माण हेतु एकत्र किया गया।

एशिया के कोने-कोने से कुशल राजमिस्त्री, पत्थर तराशने वाले, बढ़ई और हजारों श्रमिक वहाँ पहुँचे। मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों के कारीगर—विभिन्न परंपराओं से—एक साथ मिलकर इस शाही मकबरे को साकार करने लगे।

शाहजहाँ ने कहा, “यह मकबरा उत्तम होना चाहिए—ऐसा प्रतीत हो मानो स्वर्ग और धरती एक हो गए हों।”

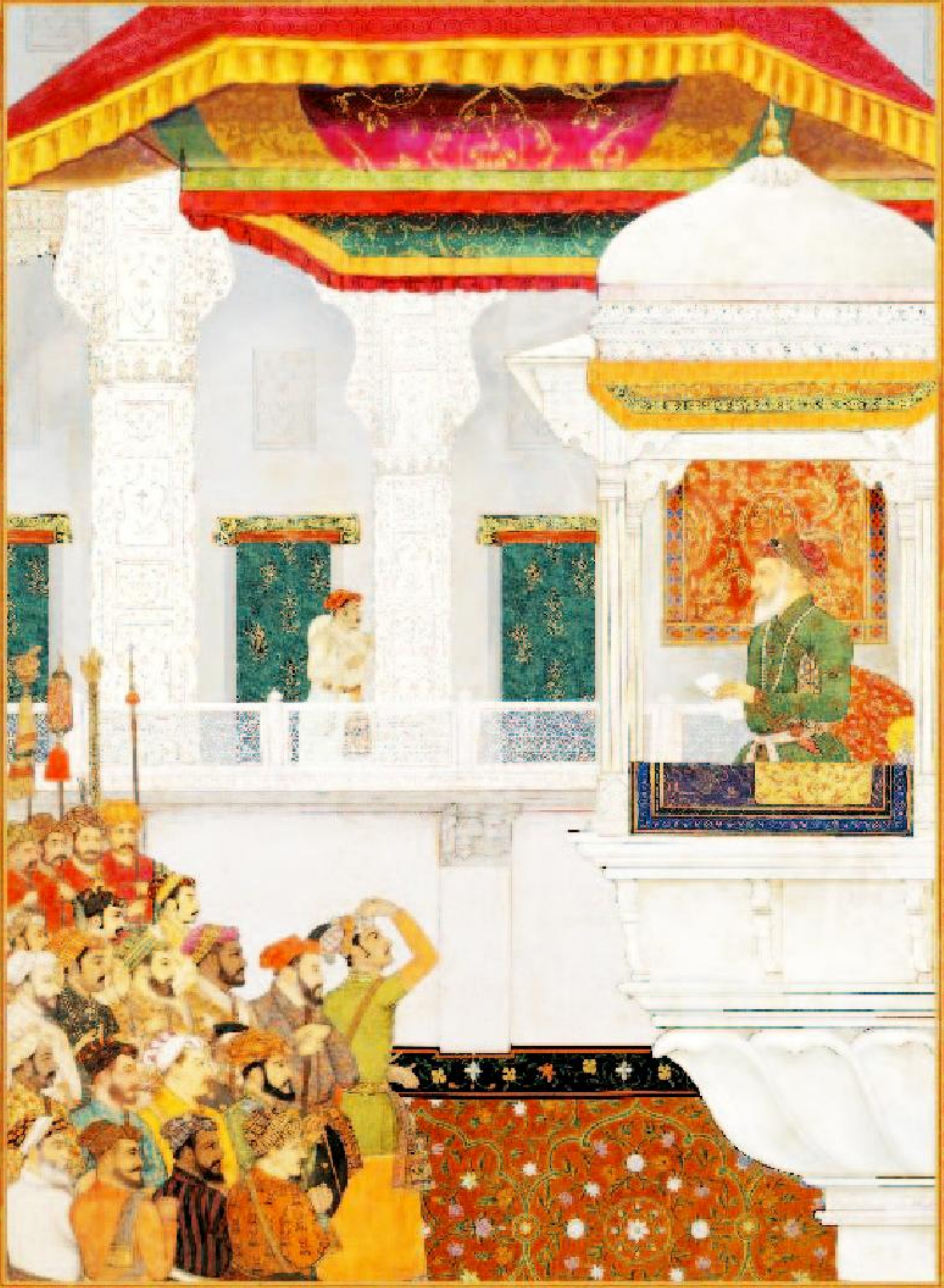

महल से अधिक दूर नहीं, यमुना नदी के एक मोड़ के पास, उस महान मकबरे का निर्माण आरम्भ हुआ। व्यस्त निर्माण स्थल के चारों ओर धीरे-धीरे श्रमिकों के लिए एक पूरा नगर बस गया, जिसे उन्होंने मुमताज़ाबाद नाम दिया।

निर्माण सामग्री जलपोतों द्वारा लाई जाती थी और फिर घाटों से हाथियों व बैलों की टीमों द्वारा स्थल तक पहुँचाई जाती थी। अविराम चलती उस प्रक्रिया में विशाल संगमरमर और बलुआ पत्थर के खंड मिट्टी के बने ढलानों पर ऊपर खींचे जाते थे। चारों ओर छेनी और हथौड़ों की आवाज़ गूँजती रहती—
कारीगर पत्थरों को तराशकर उन्हें पूर्णता प्रदान करते थे। मज़दूरों की लंबी कतारें गारे से भरे बर्तनों को एक-दूसरे तक पहुँचाती रहतीं। बढ़ई लकड़ी के मचान ऊँचे-ऊँचे बनाते जाते, जैसे-जैसे इमारत आकार लेती जाती। कलाकार अत्यंत सावधानी से संगमरमर पर नाजुक आकृतियाँ उकेरते, और फिर उनमें रंग-बिरंगे रत्न जड़ते—मानो पत्थरों में जीवन संचार कर रहे हों।

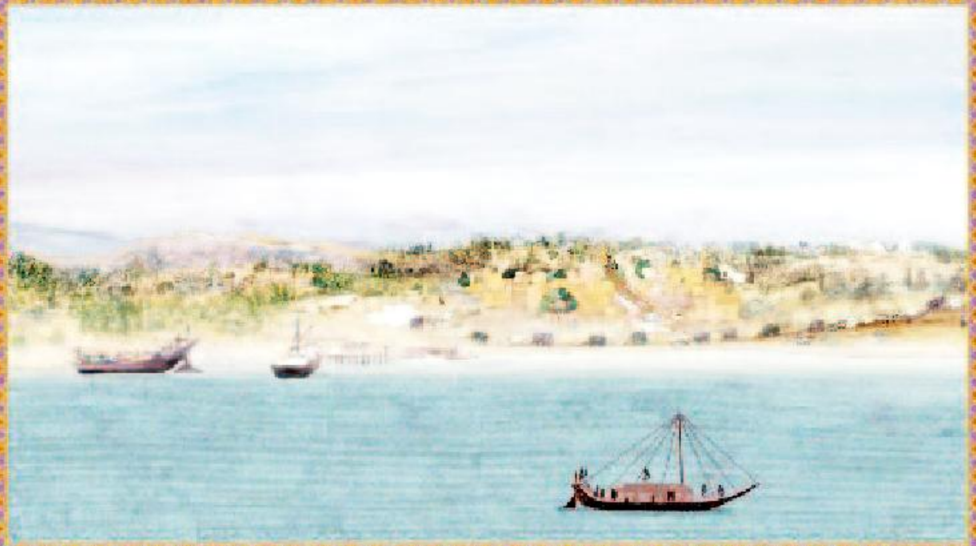

सुलेखकारों ने प्रेरणादायक शब्दों को दीवारों पर उकेरा, जो युगों तक इस मकबरे को अलंकृत करते रहेंगे। शिल्पकारों ने नाजुक संगमरमर के पुष्पों की आकृतियाँ तराशी— ऐसे फूल जो सदैव खिले रहेंगे। मकबरे के चारों ओर के उद्यानों में भी उनकी कला झलकती थी।

उस के बाद मकबरे के चारों ओर उद्यान का काम शुरू हुआ। संगमरमर की नहरें, सरो और फलदार वृक्षों से घिरी हुई, उद्यान को चार समान भागों में विभाजित करती थीं। मध्य में स्थित फव्वारे का जल रंग-बिरंगी मछलियों से भरा था, और उसका शांत दर्पण समान जल उस मकबरे और उसके चारों मीनारों का पूर्ण प्रतिबिंब दर्शाता था।

वर्ष बीतते गए… और धीरे-धीरे वह उज्ज्वल, भव्य संरचना नदी के तट पर उभरने लगी। चारों दिशाओं में यह समाचार फैल गया कि आगरा में एक अद्भुत स्मारक बन रहा है—
इतना सुंदर, मानो चाँद और सितारों की चमक उसमें समा गई हो।

कई लंबे वर्षों के बाद, जब हर एक सुलेख की पंक्ति पूरी कर ली गई और हर सुंदर विवरण अपनी जगह पर सजा दिया गया, तब मुमताज़ का मकबरा पूर्ण माना गया।
इसे ताज महल नाम दिया गया।

इस भव्य स्मारक के सामने खड़े होकर शाहजहाँ अपनी प्रिय मुमताज़ की यादों में डूब गए।
उनकी आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने कहा, "यह केवल सुंदर नहीं है... यह तो लगभग हमारे प्रेम जितना ही पूर्ण है।"

मुमताज़ महल के पार्थिव शरीर को उसके अस्थायी विश्राम स्थान से निकालकर मकबरे के तहखाने में लाया गया। शाहजहाँ ने उसके ताबूत पर मोतियों की चादर ओढ़ाई और अपने सबसे बड़े हीरे उस पर सजा दिए। फर्श पर बेहतरीन कालीन बिछाए गए। सुनहरे दीपों की रोशनी संगमरमर की दीवारों पर झिलमिला रही थी, और धूप की सुगंध से वातावरण महक उठा था। फिर उन्होंने सैनिकों को आदेश दिया कि वे ठोस चाँदी के दरवाज़ों पर पहरा दें।

उस शाम शाहजहाँ अकेले बाग में टहलते रहे। वे चमेली और गुलाब की खुशबू को महसूस कर रहे थे और उस कक्ष से आती प्रार्थनाओं को सुन रहे थे, जहाँ उनकी प्रिय मुमताज़ अपने अंतिम विश्राम में थीं।

फव्वारे में ताज महल की झिलमिलाती परछाईं को देखते हुए, उन्होंने अपने लिए नदी के दूसरी ओर एक मकबरे की कल्पना की। ताज महल की तरह ही, वह मकबरा सफेद संगमरमर की बजाय काले संगमरमर से बनाया जाता।दोनों की परछाइयाँ यमुना नदी में मिलकर एक हो जातीं।

उन्होंने गहरी साँस लेते हुए कहा, "तब... हमारे दोनों दिलों को शांति मिल जाएगी।"

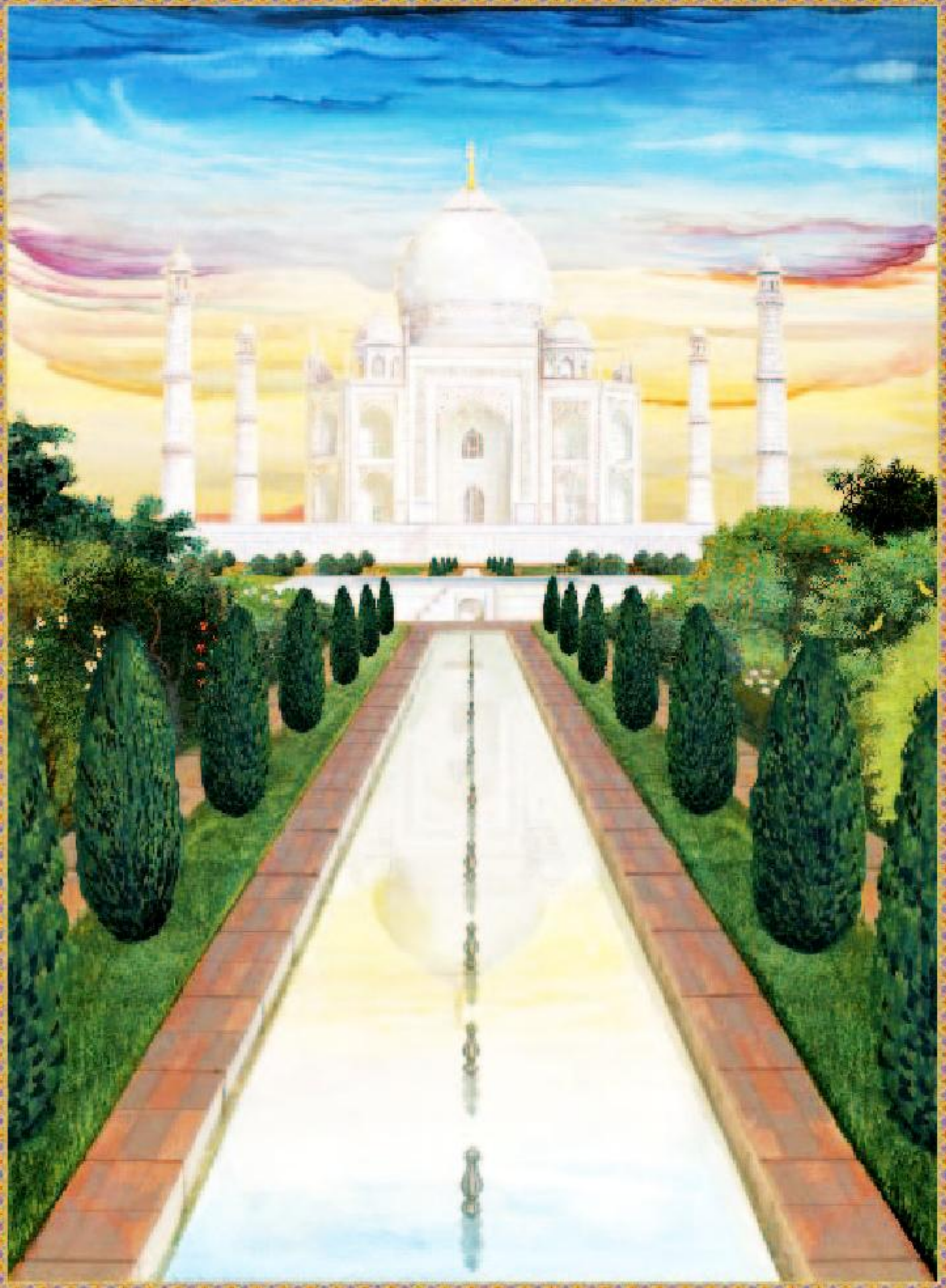

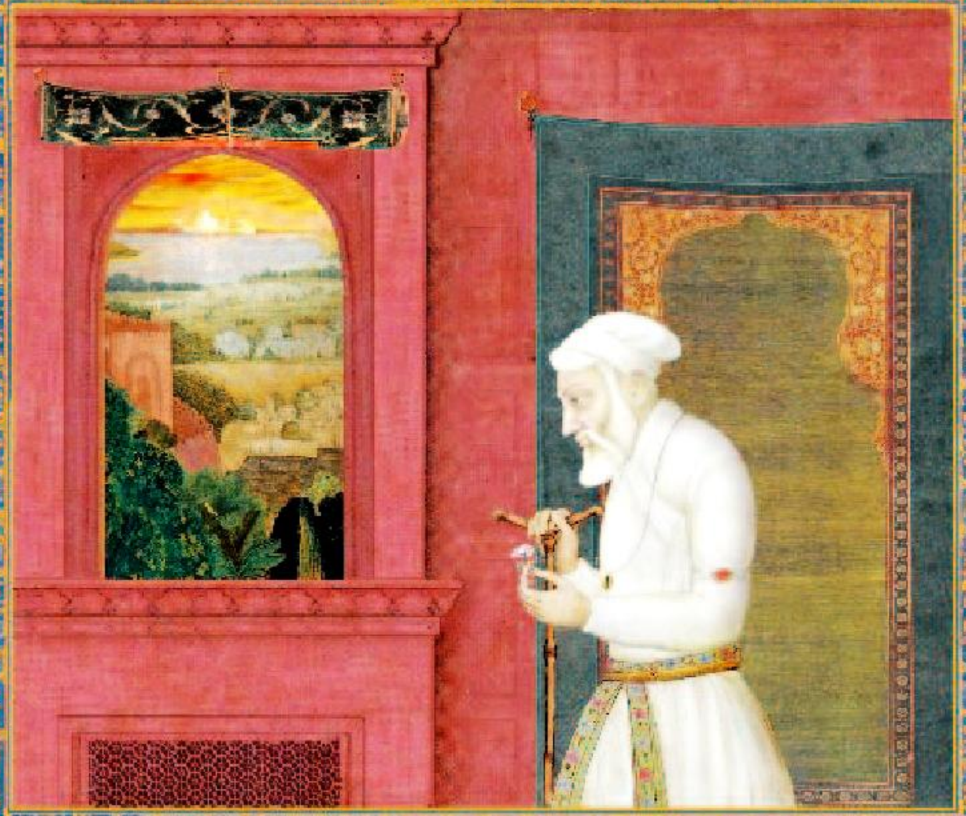

कुछ वर्षों बाद, जब ताज महल का निर्माण पूरा हो गया, शाहजहाँ बीमार पड़ गए। उनका पुत्र औरंगज़ेब, जो सत्ता का भूखा था, उसने अपने पिता की कमजोरी का लाभ उठाया। उसने साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और अपने पिता को आगरा के लाल किले में कैद कर दिया।

अपने एकाकी कारागार के कमरे की वीरानी में, शाहजहाँ को यह एहसास हुआ कि उनका काले संगमरमर का मकबरा कभी नहीं बन पाएगा। उनका एकमात्र सहारा था—दूर दिखाई देता मुमताज़ का मकबरा। सुबह की पहली रोशनी में वह उसे धुंध के बीच किसी स्वप्न की तरह उभरते हुए देखते। दोपहर की धूप में वह किसी चमकते रत्न की तरह झिलमिलाता था। ढलते सूरज की रोशनी में वह मानो आग की तरह दमक उठता था।
पूर्णिमा की चाँदनी में वह मोती की तरह चमकता था।

आठ लंबे और अकेले वर्षों तक, जीवन के अंत तक, शाहजहाँ लाल किले में ही कैद रहे। अपने कारावास के लंबे दिनों में, वे एकांत खिड़की से बाहर निहारते हुए अपने अतीत को याद करते रहते थे। उन्हें वह दिन याद आता जब मीना बाज़ार में उन्होंने उस लड़की से पहली बार अपना दिल हार दिया था।

जैसे कोई प्रिय कहानी बार-बार पढ़ता है, वैसे ही वे उन वर्षों को बार-बार जीते थे जो उन्होंने साथ बिताए थे, और उन सभी यादों को जो उन्होंने साझा की थीं। दुनिया उनके प्रेम को जान सके, इसलिए उन्होंने एक ऐसा स्मारक बनाया था जो अनंत सुंदरता का प्रतीक बन गया। यद्यपि मुग़ल साम्राज्य का भविष्य अनिश्चित था, पर उन्हें विश्वास था कि उनका प्रेम कभी भुलाया नहीं जाएगा।

मुग़ल साम्राज्य

ग्यारहवीं शताब्दी से भारत पर बार-बार मुस्लिम योद्धाओं द्वारा आक्रमण किए गए। 1526 में मध्य एशिया से आए एक तुर्को-मंगोल शासक बाबर, जिसका अर्थ "शेर" होता है, ने उत्तर भारत पर विजय प्राप्त कर मुग़ल वंश की स्थापना की। मुग़ल शासकों की विरासत उत्कृष्ट कलात्मक उपलब्धियों से भरी हुई है। उन्होंने इस्लामी और हिंदू कला परंपराओं के संगम को बढ़ावा दिया, जिससे कविता, साहित्य, चित्रकला और वास्तुकला के महानतम उदाहरण सामने आए। मुग़ल साम्राज्य ने तीन से अधिक शताब्दियों तक भारत पर शासन किया, और ताज महल का निर्माण इस साम्राज्य की चरम उपलब्धि माना जाता है।

"मुग़ल" शब्द, जो अरबी और फारसी में "मंगोल" के लिए प्रयोग होता है, कभी-कभी "मोगुल" या "मोगल" भी लिखा जाता है। इसी से अंग्रेज़ी शब्द "mogul" बना, जिसका उपयोग आज अत्यधिक धन और शक्ति वाले व्यक्ति के लिए किया जाता है।

शाहजहाँ

शाहजहाँ ऐसे शासकों की परंपरा से आते थे जिन्हें कला से गहरा प्रेम था। उनके पिता जहाँगीर को चित्रकला से प्रेम था, और उनके दादा अकबर विशेष रूप से कविता, साहित्य और संगीत के प्रेमी थे। शाहजहाँ स्वयं रत्नों और आभूषणों के पारखी थे और अपनी वास्तुकला की उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध थे।

शाहजहाँ, जहाँगीर और राजपूत राजकुमारी जोधाबाई के पुत्र थे, जो राजकुमार उदय सिंह की बेटी थीं। उनका जन्म 15 जनवरी 1592 को लाहौर में हुआ, जो उस समय मुग़ल साम्राज्य की राजधानी था। उनका नाम उनके दादा सम्राट अकबर ने ख़ुर्रम रखा और उन्होंने उन्हें गोद भी लिया। ख़ुर्रम अकबर की देखरेख में 1605 तक रहे।

1599 में राजधानी आगरा स्थानांतरित की गई। यहीं पर पंद्रह वर्ष की आयु में ख़ुर्रम की मुलाकात अर्जुमंद बानो से हुई, जिन्हें बाद में मुमताज़ महल के नाम से जाना गया। लगभग छह वर्ष बाद, 1612 में उनका विवाह हुआ। अर्जुमंद के अलावा ख़ुर्रम की दो अन्य पत्नियाँ भी थीं। राजघरानों में ऐसे विवाह राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने और साम्राज्य की विविध जातियों और संस्कृतियों को एकजुट रखने के लिए किए जाते थे। मुस्लिम कानून के अनुसार, प्रत्येक पुरुष को चार पत्नियाँ रखने की अनुमति थी, बशर्ते उनके साथ समान व्यवहार किया जाए।

जहाँगीर 1605 से 1627 तक सम्राट रहे। 1617 में उन्होंने ख़ुर्रम को "शाहजहाँ" की उपाधि दी। जहाँगीर की मृत्यु के बाद, शाहजहाँ ने 1628 से 1658 तक शासन किया।

1657 में जब शाहजहाँ बीमार पड़े, तो उनके चारों पुत्रों ने इसे सिंहासन के लिए संघर्ष का संकेत माना। जहाँ सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह को पिता का समर्थन प्राप्त था, वहीं तीसरे पुत्र औरंगज़ेब ने अपनी चतुराई और कठोरता से अपने भाइयों को परास्त कर 1658 में सत्ता अपने हाथ में ले ली। उसने अपने पिता शाहजहाँ को आगरा के लाल किले में कैद कर दिया। शाहजहाँ अपनी प्रिय पुत्री जहाँआरा के साथ वहीं रहे, जिसने उनकी मृत्यु (1666) तक उनकी सेवा की।

शाहजहाँ के लिए ताज महल एक ऐसा सपना था जो पूरी तरह साकार नहीं हो सका। उन्होंने अपने लिए अपनी पत्नी के समान एक दूसरा मकबरा बनाने की कल्पना की थी, जो काले संगमरमर से यमुना नदी के दूसरी ओर बनाया जाना था। उसकी परछाई ताज महल की परछाई से मिलकर उनके प्रेम का एक अद्भुत प्रतीक बनती। लेकिन यह दूसरा मकबरा कभी बन नहीं सका। अंततः औरंगज़ेब ने शाहजहाँ को मुमताज़ के पास ही ताज महल में दफनाया, जिससे वे मृत्यु के बाद भी वैसे ही एक साथ रहे, जैसे जीवन में थे।

महल जीवन

आगरा का लाल किला एक छोटे शहर जैसा था। यह एक आवासीय महल, किला और प्रशासन का केंद्र था। इसमें शाही परिवार के साथ-साथ सैनिक, शाही सलाहकार और नौकर रहते थे। हालाँकि महिलाएँ महल की दीवारों के भीतर ज़नाना (महिलाओं के रहने का स्थान) में रहती थीं और पर्दा प्रथा का पालन करती थीं, फिर भी वे कई स्वतंत्रताओं का आनंद लेती थीं। उन्हें गणित, विज्ञान, खगोल विज्ञान, कविता, दर्शन और सुलेख (कैलिग्राफी) की शिक्षा दी जाती थी। कुछ महिलाएँ विद्वान बन गईं, और अन्य ने ईश्वर की स्तुति में आध्यात्मिक कविताएँ लिखीं, जिन्हें मुसलमानों द्वारा कला के उच्चतम रूपों में से एक माना जाता था। शाहजहाँ की सौतेली माँ नूरजहाँ कविता लिखती थीं और उन्होंने गुलाब के अत्तर (इत्र) की खोज की। उन्होंने जहाँगीर के साथ मिलकर साम्राज्य पर शासन किया और उनके साथ शिकार अभियानों में भी गईं, ठीक वैसे ही जैसे मुमताज़ शाहजहाँ के साथ यात्रा करती थीं।

मुमताज़ महल

अरजुमंद बानो, जो सम्राट जहाँगीर के प्रधानमंत्री आसफ खान की बेटी थीं, चौदह वर्ष की थीं जब उनकी पहली मुलाकात राजकुमार ख़ुर्रम से हुई, जो बाद में शाहजहाँ बने। मुमताज़ नाम, जो किंवदंती के अनुसार शादी के बाद अरजुमंद को दिया गया था, कई अर्थों में अनुवादित किया गया है, जैसे — "श्रेष्ठ", "चुनी हुई", "मुकुट" और "रत्न"। हालाँकि शाहजहाँ की दो अन्य पत्नियाँ भी थीं, उनके सभी जीवित बच्चे मुमताज़ से ही थे। उनके चौदह बच्चों में से केवल चार पुत्र और दो पुत्रियाँ ही शैशवावस्था के बाद जीवित रहीं।

मुमताज़ महल वर्ष 1630 में अपने पति के साथ दक्कन पठार की यात्रा पर गईं। उनकी मृत्यु 17 जून, 1631 को बुरहानपुर शहर में, उन्तालीस वर्ष की आयु में हुई। कहा जाता है कि उनकी मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने पूरे राज्य में दो वर्षों का शोक घोषित कर दिया। यह भी कहा जाता है कि वे इतने शोक में डूब गए थे कि उन्होंने अपने साम्राज्य को अपने पुत्रों में बाँटने और स्वयं को पूरी तरह प्रार्थना, उपवास, रात्रि-पूजा और ईश्वर की भक्ति में समर्पित करने की इच्छा जताई। लेकिन उनके वफादार प्रजा और दरबारियों ने उन्हें शासन जारी रखने के लिए समझाया।

ताजमहल के चारों ओर की प्रेम कहानी मुख्यतः किंवदंतियों पर आधारित है, क्योंकि शाहजहाँ और मुमताज़ महल के निजी जीवन के बारे में बहुत कम रिकॉर्ड उपलब्ध हैं, क्योंकि यह विषय विशेष रूप से इस्लामी संस्कृति और समाज में संवेदनशील माना जाता था।

ताजमहल का निर्माण

ताजमहल का निर्माण 1632 की शुरुआत में शुरू हुआ और लगभग 1643 तक पूरा हो गया। जब इसका निर्माण हो रहा था, तब इसे रौज़ा-ए-मुनव्वरा (प्रकाशित मकबरा) कहा जाता था, लेकिन निर्माण पूर्ण होने के बाद लोग इसे ताजमहल कहने लगे। महल का अर्थ "महल" और ताज का अर्थ "मुकुट" होता है।

ताजमहल शाहजहाँ की गहरी इस्लामी दृष्टि का परिणाम है: इसका प्रवेश द्वार और बाग़ स्वर्ग के द्वार और बाग़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और मकबरा, जो बाग़ के एक छोर पर ऊँचाई पर स्थित है, ईश्वर के दिव्य सिंहासन का प्रतीक है। इस मकबरे के मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद माने जाते हैं। गणित, अभियांत्रिकी और ज्योतिष के अलावा, इस मकबरे के सभी डिज़ाइनर साहित्य और धर्मशास्त्र में शिक्षित थे। शाहजहाँ स्वयं भी इसके डिज़ाइन में शामिल थे और उन्होंने उन सभी तत्वों का चयन किया जो पूरे ढाँचे को एकता प्रदान करते हैं। ताजमहल का स्वरूप अपनी उत्कृष्ट अनुपातों और सफेद संगमरमर की बाहरी सतह के कारण अद्वितीय है, जिसमें कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों की जड़ाई की गई है — एक विशेष कला शैली।

गुंबद:

संगमरमर से बना यह मकबरा, दोनों ओर लाल बलुआ पत्थर की इमारतों से घिरा हुआ, नदी के किनारे एक विशाल चबूतरे पर स्थित है, जिसकी लंबाई लगभग 1,122 फीट (342 मीटर) है। यह मुख्य मकबरा लगभग 180 फीट (55 मीटर) चौकोर है, जिसके कोने कटे हुए हैं। यह एक ऊँचे संगमरमर के आधार पर स्थित है, जिसके प्रत्येक कोने पर एक-एक मीनार खड़ी है। मुख्य गुंबद की ऊँचाई लगभग 250 फीट (76 मीटर) है,
और इसका व्यास लगभग 58 फीट (18 मीटर) है। अंदर के कक्ष में दो समाधियाँ हैं, जो संगमरमर की जाली से घिरी हुई हैं। वास्तव में, ये केवल प्रतीकात्मक कब्रें हैं—असल कब्रें नीचे बने तहखाने में स्थित हैं। मुमताज़ की कब्र ठीक मध्य में स्थित है, जबकि शाहजहाँ की कब्र उसके एक ओर है—जो परंपरागत समरूपता से थोड़ा अलग है। शाहजहाँ की कब्र पर एक कलमदान बना है— जो उनके शासक और विद्वान होने का प्रतीक है।
मुमताज़ की कब्र पर एक लेख अंकित है, जो उन्हें जन्नत की संरक्षिका के रूप में दर्शाता है।

मीनारें

चारों कोनों पर बनी मीनारें हल्की-सी बाहर की ओर झुकी हुई हैं। यह वास्तुशिल्प की एक चतुर तकनीक है—जिससे यदि भूकंप आए तो वे मुख्य मकबरे पर न गिरें। प्रत्येक मीनार की ऊँचाई लगभग 138 फीट (42 मीटर) है।

द्वार

लाल बलुआ पत्थर से बना भव्य प्रवेश द्वार, उद्यान के दूसरे छोर पर स्थित है। इस पर कुरान की आयतें सुंदर अरबी सुलेख में अंकित हैं। इन अक्षरों का आकार ऊपर की ओर बढ़ता जाता है,
जिससे नीचे से देखने पर वे समान आकार के प्रतीत होते हैं।

मस्जिद और विश्राम भवन

मकबरे के दोनों ओर स्थित दो समान इमारतें संतुलन और सौंदर्य प्रदान करती हैं। पश्चिम दिशा में स्थित इमारत मस्जिद है, जहाँ नमाज़ अदा की जाती है। पूर्व दिशा की इमारत विश्राम भवन है,
जिसका उपयोग विशेष अवसरों पर किया जाता था।

उद्यान:

उद्यान, जिसे बागीचा भी कहा जाता है, पारंपरिक फारसी शैली में बनाया गया है, जिसे चारबाग के नाम से जाना जाता है। इसे भारत में मुग़ल साम्राज्य के प्रथम सम्राट बाबर द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य धरती पर स्वर्ग की पूर्णता को पुनः स्थापित करना है। यह उद्देश्य आंशिक रूप से चार संख्या पर आधारित एक गणितीय संरचना के उपयोग से पूरा किया जाता है, जो चार दिशाओं और उनके गुणकों का प्रतीक है। उद्यान के प्रत्येक भाग को चार क्यारियों में विभाजित किया गया है, जिनमें प्रारंभ में लगभग चार सौ फूल लगाए गए थे। उद्यान को विभाजित करने वाली जलधाराएँ स्वर्ग के बाग की नदियों का प्रतीक हैं, जो दूध और शहद, पानी और मदिरा के साथ बहती हैं। सरू और फलदार वृक्ष जीवन के प्रतीक के रूप में चुने गए हैं। पुरातत्वविदों ने नदी के दूसरी ओर महताब बाग (चाँदनी बाग) के अवशेष खोजे हैं। उसका प्रतिबिंबित जलाशय ताज महल के उत्तरी भाग का एक सटीक प्रतिबिंब बनाता है। यह इस बात का संभावित प्रमाण माना जाता है कि शाहजहाँ ने अपने काले संगमरमर वाले प्रतिरूप (ब्लैक ताज) के निर्माण की योजना शुरू कर दी थी, लेकिन उनकी बीमारी के कारण उत्तराधिकार के युद्ध ने इस योजना को अधूरा छोड़ दिया।

प्रेम का अमर स्मारक

ताजमहल मुगल साम्राज्य की सर्वोच्च उपलब्धियों में से एक है। यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए कला और शिल्प कौशल का अद्भुत प्रतीक बन चुका है। इसकी भव्यता और सौंदर्य को लेकर अनेक प्रश्न उठते रहे हैं, और इतिहासकारों ने इसे अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा है। फिर भी, एक बात पर सभी सहमत हैं— कि इस अद्भुत संरचना के माध्यम से शाहजहाँ ने स्वयं को और अपनी प्रिय मुमताज़ को अमर कर दिया। ताजमहल केवल एक इमारत नहीं है— यह एक प्रेम कथा की जीवित अभिव्यक्ति है, जो समय की सीमाओं से परे जाकर सदैव जीवित रहेगी।

“यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।”

ये शब्द उस कविता के हैं जो दीवाने आम में शाहजहां के मोर के सिंहासन पर लिखे थे।